M. A. Semester - I
Philosophy CC-02
Unit - I

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Concept of Universal Religion according to Vivekananda
(Part-I)

साधारणतः सार्वभौम धर्म के उद्देश्य या आदर्श को स्पष्ट करने के पहले विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म का अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक है। अतः हम सार्वभौम धर्म के अर्थ की संक्षिप्त विवेचना करेंगे।

साधारणतः सार्वभौम धर्म को एक ऐसे गुलदस्ते की तरह समझा जाता है जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल एक साथ लगे रहते हैं या एक ऐसे हार की उपमा दी जाती है जिसमें विभिन्न मोती पिरोये गये हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सार्वभौम धर्म से लोग एक ऐसे संश्लेषणात्मक धर्म की बात सोचते हैं, जिसमें विभिन्न धर्मों की अच्छी बातों को एकत्रित कर लिया गया है। जहाँ तक विवेकानन्द का सार्वभौम धर्म के सन्दर्भ में विचार है, यह कहना उपयुक्त होगा कि उन्होंने सार्वभौम धर्म का अर्थ विभिन्न धर्मों के योग या संश्लेषण को नहीं समझा है, विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म बिना विशेष का एक निरर्थक और अमूर्त विचार है। उसी तरह से सार्वभौम धर्म बिना विशिष्ट धर्म के एक अमूर्त विचार बन जाता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि सार्वभौम धर्म की स्थापना का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है, विवेकानन्द ने भी सार्वभौम धर्म की स्थापना की है, किन्तु सार्वभौम धर्म के माध्यम से वे यह कभी नहीं चाहे कि

सभी धर्मों में समानता की जाय। उन्होंने कभी ऐसा नहीं चाहा कि हिन्दू ईसाई बन जाय या ईसाई मुसलमान बन जाये या मुसलमान बौद्ध बन जाय। उनके अनुसार हर व्यक्ति को अपने धर्म के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। दूसरे धर्म के प्रति घृणा न रखते हुए अपने धर्म के प्रति निष्ठा रखी जा सकती है। अतः सार्वभौम धर्म का आदर्श अपने धर्म के प्रति निष्ठा रखते हुए दूसरे धर्म के प्रति घृणा नहीं रखना कहा जा सकता है।

हम पाते हैं कि भिन्न-भिन्न धर्मों के कर्म-काण्ड भिन्न-भिन्न होते हुए भी उनमें आन्तरिक स्तर पर समानता है, उन सबों में 'पवित्रता' का पुट विद्यमान है। विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म का लक्ष्य तब ही प्राप्त किया जा सकता है जब हम यह मानकर चलें कि भिन्न-भिन्न धर्म एक ही आध्यात्मिक सत्य को प्रकाशित करते हैं। धर्म कोई सिद्धान्त या कर्मकाण्ड नहीं है, बल्कि धर्म का सही अर्थ आत्मानुभूति में है। विवेकानन्द ने लिखा है—

"...Religion is realization, not talk nor doctrine, nor theories, however, beautiful they may be. It is being and becoming, nor hearing or acknowledging; it is the whole Soul becoming changed into what it believes."

(Vivekananda, Complete work of Swami Vivekananda Birth Centenary Edition, Vol. VIII, P. 141.)

विवेकानन्द मानव को आध्यात्मिक मान सार्वभौम धर्म का लक्ष्य इसी आध्यात्मिकता को प्राप्त करना मानते हैं।

पुनः विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म का लक्ष्य साम्प्रदायिक धर्म

की कमजोरियों को दूर करना भी है। साम्प्रदायिक धर्म एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय से, एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से अलग करता है, किन्तु सार्वभौम धर्म का लक्ष्य भी सार्वभौम होता है। वह एक मानव को दूसरे मानव से, एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय से अलग नहीं करता है। उन्हें एक साथ मिलाता है। विवेकानन्द ने कहा है —

"..... when we come to the real, Spiritual universal conception Thus, and then alone religion will become real and living, it will come into our very nature, live in our every movement, penetrate every parts of our society and be infinitely more a power of good than it has ever been before."
(Swami Vivekananda, Jnana yoga. p. 69.)

सार्वभौम धर्म का कार्य मानव के सामने एक सार्वभौम आदर्श प्रस्तुत करना है, अतः विवेकानन्द का कहना है कि सार्वभौम धर्म सदा 'True Religion' होता है। विवेकानन्द का कहना है कि यह बात सही है कि इस समाज में अनेक प्रकार की धार्मिक संस्थाएँ हैं जिनका अपना धार्मिक आचरण है। यह भी सही है कि एक धार्मिक संस्थाएँ, दूसरे धार्मिक संस्थान के साथ कभी भी सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध नहीं रख पाता है। एक धर्म दूसरे धर्म से अपने को अच्छा मानता है। विवेकानन्द के अनुसार इसका कारण धर्म के दो पक्ष हैं — और वे हैं
(1) धर्म के बाह्य पक्ष और
(2) धर्म का आन्तरिक पक्ष।

विवेकानन्द के अनुसार बाह्य पक्ष में एक धर्म दूसरे धर्म से विलग है, लेकिन आन्तरिक पक्ष सबका एक ही है, सभी धर्मों का आदर्श सार्वभौम है। विवेकानन्द का कहना है कि यदि हम धर्म को सम्प्रदाय के चंगुल से छुड़ाना चाहते हैं तो एक प्रकार का सार्वभौम धर्म प्रतिपादित करना होगा।

To be continued